बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 173 ● नई दिल्ली ● शुक्रवार 24 अप्रैल 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

विकास मार्ग पर भीषण सड़क खदता, कार की टक्कर से बाइक सवार एक की मौत, तीन घायल; आरोपी गिरफ्तार

नई दिल्ली ।दिल्ली के विकास मार्ग पर एक भीषण सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य घायल हो गए। यह घटना 22 अप्रैल की देर रात गीता कॉलोनी कट के पास हुई, जब एक तेज रफ्तार कार ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। स्थानीय लोगों ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी चालक को मौके पर ही दबोच लिया। पुलिस को सुबह करीब 1 बजकर 50 मिनट पर पीसीआर कॉल के माध्यम से विकास मार्ग पर सड़क दुर्घटना की सूचना मिली। यह बताया गया कि घायल व्यक्तियों को अस्पताल ले जाया गया है और कार चालक को आम लोगों ने पकड़ लिया है। सूचना मिलते ही पुलिसकर्मी तुरंत मौके पर पहुंचे।

प्रवेश वाही का मेयर बनना तय-पार्टी और सीएम दोनों की हैं पसंद, सरकार के साथ सहज भाव बनेगा काम की ताकत

नई दिल्ली । दिल्ली नगर निगम में मेयर पद को लेकर तस्वीर लगभग साफ हो गई है। भाजपा ने प्रवेश वाही के नाम पर दांव खेला है और मौजूदा सियासी समीकरणों को देखते हुए उनका अगला मेयर बनना तय माना जा रहा है। संगठन और सरकार दोनों में संतुलन साधने की उनकी क्षमता उन्हें इस पद के लिए मजबूत दावेदार बनाती है। एमसीडी में मेयर पद के लिए भाजपा ने गुरुवार को नामांकन के अंतिम दिन प्रवेश वाही के नाम का एलान किया। सदन में भाजपा के पूर्ण बहुमत और आम आदमी पार्टी के मेयर चुनाव से बाहर रहने के फैसले के बाद उनकी जीत लगभग तय मानी जा रही है। प्रवेश वाही तीन बार पार्षद रह चुके हैं और पार्टी संगठन में उन्हें एक अनुभवी और भरोसेमंद चेहरा माना जाता है। वे पूर्व उत्तरी दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके अलावा, वे हाल तक सदन के नेता की जिम्मेदारी निभा रहे थे, जिससे उन्हें प्रशासनिक कामकाज का अच्छा अनुभव है।

पार्टी और सीएम दोनों की पसंद

पार्टी के अंदर उनकी पकड़ मजबूत मानी जाती है और शीर्ष नेतृत्व के साथ उनके करीबी संबंध भी उनकी ताकत हैं। सूत्रों के मुताबिक, उनके नाम पर सिर्फ संगठन ही नहीं बल्कि

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की भी सहमति है। दोनों के बीच कामकाज को लेकर अच्छा तालमेल देखा गया है और सरकार बनने के बाद कई मौकों पर प्रवेश वाही ने मुख्यमंत्री के साथ मिलकर काम किया है।

उत्तरी दिल्ली में रहे पार्टी का विश्वसनीय चेहरा

रोहिणी ई वार्ड से पार्षद प्रवेश वाही को हमेशा से पार्टी का विश्वसनीय चेहरा माना जाता है। वे समय-समय पर विधानसभा और लोकसभा चुनावों में चुनाव प्रभारी की जिम्मेदारी भी निभाते रहे हैं। पंजाब से चुनाव लड़ने आए हंसराज हंस समेत कई उम्मीदवारों के चुनाव प्रबंधन में उनकी भूमिका अहम रही है।

क्लीन दिल्ली का लक्ष्य चुनौती

दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने हाल ही में एमसीडी की जिम्मेदारियों को लेकर साफ संदेश दिया है कि राजधानी को साफ-सुथरा और बेहतर बनाने में निगम की भूमिका सबसे अहम है। उन्होंने यह भी कहा कि अब बजट की कमी नहीं होगी और जरूरत के मुताबिक संसाधन उपलब्ध कराए जाएंगे, लेकिन क्लीन दिल्ली का लक्ष्य हर हाल में हासिल करना होगा। ऐसे में, अगर प्रवेश वाही मेयर बनते हैं तो उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती दिल्ली को साफ और व्यवस्थित बनाना होगी। साथ ही, सरकार और निगम के बीच बेहतर तालमेल बनाकर काम करना भी उनकी प्राथमिकता रहेगा। फिलहाल सियासी हालात पूरी तरह उनके पक्ष में नजर आ रहे हैं। अब देखना होगा कि मेयर बनने के बाद प्रवेश वाही राजधानी की उम्मीदों पर कितना खरा उतरते हैं।

अस्पतालों में नहीं चलेगी लापरवाही! सीएम रेखा गुप्ता का औचक निरीक्षण, मरीजों से खुद पूछा- डॉक्टर समय पर आते हैं या नहीं ?

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने आज सिविल लाइंस स्थित अरुणा आसफ अली अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अस्पताल के विभिन्न वार्डों का दौरा कर वहां दी जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया और मरीजों व उनके परिजनों से सीधे संवाद कर डॉक्टरों की उपलब्धता और मिल रही व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली।

नागरिक-केंद्रित स्वास्थ्य तंत्र पर जोर

निरीक्षण के बाद मुख्यमंत्री ने डॉक्टरों, कर्मचारियों और अस्पताल प्रबंधन के साथ बैठक कर फीडबैक लिया। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक आधुनिक, तेज और संवेदनशील बनाने की दिशा में कड़े निर्देश दिए। श्रीमती गुप्ता ने स्पष्ट किया कि सरकार का संकल्प दिल्ली

के हर नागरिक को एक ऐसा स्वास्थ्य तंत्र प्रदान करना है, जहाँ समय पर उपचार के साथ-साथ आधुनिक सुविधाएं और स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित हो सके, ताकि हर मरीज को सम्मानजनक सेवा प्राप्त हो।

गर्मियों के लिए विशेष इंतजाम के निर्देश

बढ़ती गर्मी को देखते हुए मुख्यमंत्री ने अस्पताल प्रशासन को विशेष सतर्कता बरतने को कहा है। उन्होंने निर्देश दिए कि अस्पताल में दवाइयों की पर्याप्त उपलब्धता, ठंडे पीने के पानी की व्यवस्था, स्वच्छता और मरीजों की सुख-सुविधा से जुड़े सभी इंतजाम सर्वोच्च प्राथमिकता पर पूरे किए जाएं। उन्होंने प्रबंधन को सुनिश्चित करने को कहा कि गर्मी के कारण किसी भी मरीज या तीमारदार को असुविधा न हो।

संवेदना और विश्वास का केंद्र बनेंगे अस्पताल

मुख्यमंत्री ने अपनी प्राथमिकताओं को दोहराते हुए कहा कि दिल्ली का हर अस्पताल सेवा, संवेदना और विश्वास का केंद्र बने, इसी दिशा में सरकार निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा, "हमारा लक्ष्य है कि हर परिवार को भरोसेमंद स्वास्थ्य सुरक्षा मिले और हर नागरिक को समय पर उपचार उपलब्ध हो।" मुख्यमंत्री के इस औचक निरीक्षण से अस्पताल प्रबंधन में हलचल रही और उन्होंने व्यवस्थाओं को तत्काल दुरुस्त करने के निर्देश दिए।

दिल्ली हाईकोर्ट की सख्ती- केजरीवाल की सुनवाई के वीडियो हटाने के आदेश, नोटिस जारी; केंद्र को बनाया पक्षकार

नई दिल्ली । दिल्ली हाईकोर्ट ने अरविंद केजरीवाल की 13 अप्रैल की सुनवाई से जुड़े सभी सोशल मीडिया लिंक हटाने का निर्देश दिया है और केंद्र सरकार को मामले में पक्षकार बनाया है। साथ ही कोर्ट ने केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और अन्य को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। न्यायमूर्ति वी कामेश्वर राव और न्यायमूर्ति मनमीत अरोड़ा की पीठ वकील वैभव सिंह द्वारा दायर जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही थी। याचिका में आरोप लगाया गया है कि केजरीवाल, सिसोदिया, पत्रकार रवीश कुमार और अन्य ने अदालत की कार्यवाही को बिना अनुमति रिकॉर्ड कर सोशल मीडिया पर प्रसारित किया। कोर्ट ने कहा कि हाईकोर्ट के नियमों के तहत अदालत की कार्यवाही की रिकॉर्डिंग और उसे अपलोड करना सख्त रूप से प्रतिबंधित है, जब तक कि पूर्व अनुमति न ली जाए। अदालत ने सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यस्थ दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 के नियम 3(1)(b)(&i) का भी हवाला दिया, जिसमें प्लेटफॉर्म्स को अवैध सामग्री रोकने के लिए उचित प्रयास करने को कहा गया है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने निर्देश दिया कि यदि कोई लिंक अभी भी मौजूद है तो उसे हटाया जाए। साथ ही स्पष्ट किया कि यदि ऐसे वीडियो दोबारा सामने आते हैं तो प्लेटफॉर्म्स को सूचना मिलने पर तुरंत उन्हें हटाना होगा और इसकी जानकारी रजिस्ट्रार जनरल को देनी होगी। पीठ ने कहा कि इस तरह की सामग्री के प्रसार से न्यायपालिका की छवि पर असर पड़ता है। वहीं, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने कहा कि मूल अपलोडर की पहचान करना या ऐसे कंटेंट को स्वतः ब्लॉक करना तकनीकी रूप से कठिन है। एक प्लेटफॉर्म की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता अरविंद पी दातार ने कहा कि आधिकारिक सूचना मिलने के बाद आपत्तिजनक सामग्री हटा दी गई, लेकिन मध्यस्थ (इंटरमीडियरी) सेंसर की भूमिका नहीं निभा सकते। अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल चेतन शर्मा ने अदालत को बताया कि यह मुद्दा न्यायपालिका की संस्थागत गरिमा से जुड़ा है और इस पर गंभीर विचार की आवश्यकता है। मामले की अगली सुनवाई 6 जुलाई को तय की गई है। यह मामला पहले मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष सूचीबद्ध था, लेकिन न्यायमूर्ति तेजस करिया ने खुद को सुनवाई से अलग कर लिया, जिसके बाद इसे वर्तमान पीठ के समक्ष रखा गया।

अमित जोगी को सुप्रीम कोर्ट से राहत, एनसीपी नेता की हत्या के मामले में सजा और दोषसिद्धि पर लगी रोक

नई दिल्ली ।

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी के बेटे अमित जोगी को बड़ी राहत देते हुए उनकी सजा पर रोक लगा दी। छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने अमित जोगी को एनसीपी नेता रामअवतार जग्गी की 2003 में हुई हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी, जिस पर अब सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, संदीप मेहता और विजय बिश्नोई की पीठ ने अमित जोगी की विशेष अनुमति याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। अमित जोगी ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें बरी करने वाले ट्रायल कोर्ट के फैसले को पलटते हुए दोषी करार दिया गया था और आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले की आगे की सुनवाई पूरी होने तक अमित जोगी की सजा पर रोक रहेगी। यह मामला 4 जून 2003 को रायपुर में हुए एनसीपी नेता और कारोबारी राम अवतार जग्गी की हत्या से जुड़ा है। उस समय छत्तीसगढ़ में अजीत जोगी मुख्यमंत्री थे। राम अवतार जग्गी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जिसे एक बड़ी साजिश का हिस्सा बताया गया। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने हाल ही में अपने फैसले में अमित जोगी को आपराधिक साजिश और हत्या का दोषी ठहराया था। इससे पहले 2007 में ट्रायल कोर्ट ने सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया था, जबकि 28 अन्य आरोपियों को दोषी ठहराते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी।

आईआरएस अफसर की बेटी के कत्ल की कहानी 6:39 पर घर में घुसा, 41 मिनट में पार कीं हैवानियत की हदें; कपड़े भी बदले

नई दिल्ली । दिल्ली के कैलाश हिल इलाके में आरोपी राहुल मीणा की करतूत का सीसीटीवी में खुलासा किया है। आरोपी ने दरिंदगी को 41 मिनट में अंजाम दिया। इस दौरान उसने भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के वरिष्ठ अधिकारी की बेटी के साथ दुष्कर्म, मारपीट और घर में लूट की। फिर वह अपने कपड़े बदलकर आसानी से फरार हो गया। दिल्ली पुलिस ने भी युवती से दुष्कर्म की पुष्टि की है। पुलिस के मुताबिक, आरोपी बुधवार सुबह करीब 6.20 बजे आस्था कुंज पार्क से कॉलोनी में घुसा था। इसके बाद वह 6.39 पर युवती के घर में घुसा। फिर वह वारदात को अंजाम देने के बाद 7.20 बजे बिल्डिंग से बाहर निकल गया। इन्हीं 41 मिनटों में आरोपी ने अपनी हैवानियत का कहर युवती पर बरपाया। हैरत की बात यह है कि किसी भी पड़ोसी को उसकी चीख सुनाई नहीं दी। जब पुलिस ने पड़ोसियों व आसपास के सुरक्षाकर्मियों से बात की तो सभी ने घटना से जुड़ी जानकारी के बारे में विरोधाभास बयान दिए। हालांकि पुलिस ने सभी के बयान रिकॉर्ड में रख लिए हैं। वारदात के बाद जब वह बाहर निकला तो इलाके में कार साफ करने वाले एक शख्स ने उसे पहचान लिया और बातचीत भी की। आरोपी ने सामान्य ढंग से जवाब दिया और वहां से निकल गया।

दुष्कर्म, हत्या और लूटपाट की धारा में एफआईआर दर्ज

संयुक्त पुलिस आयुक्त विजय कुमार ने बताया कि मामले में कई सारे साक्ष्य मिले हैं। इस मामले में दुष्कर्म, हत्या और लूटपाट की धारा में एफआईआर दर्ज की गई है।

आरोपी के सत्यापन की हो रही जांच

पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी राहुल मीणा का पुलिस सत्यापन हुआ था या नहीं इसकी जांच की जा रही है। जांच में पता चला है कि आईआरएस अधिकारी ने अपने कार्यालय में किसी जानकार के द्वारा राहुल को अपने यहां घरेलू सहायक तौर पर रखा था। बाद में जब कर्ज आदि का पता चला तब उसे निकाला

था। दक्षिणी दिल्ली के पॉश इलाके कैलाश हिल में दिल दहला देने वाली वारदात हुई। भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के वरिष्ठ अधिकारी की बेटी (22) की उनके पूर्व नौकर ने दुष्कर्म के बाद मोबाइल फोन चार्जर की केबल से गला घोंटकर बेरहमी से हत्या कर दी। आरोपी अलवर जिले के राजगढ़ थाना क्षेत्र निवासी राहुल मीणा (19) को डेढ़ महीने पहले रुपयों में हेराफेरी करने पर काम से हटाया गया था। पुलिस ने उसे द्वारका में होटल से गिरफ्तार कर लिया। युवती ने आईआईटी दिल्ली से इंजीनियरिंग की थी। अभी संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा की तैयारी कर रही थी। पुलिस के अनुसार, युवती माता-पिता के साथ अमर कॉलोनी के कैलाश हिल स्थित बिल्डिंग के तीसरे फ्लोर पर रहती थी। बुधवार सुबह 6 बजे उसके माता-पिता जिम गए थे और घरेलू सहायक के लिए चाबी घर के बाहर रख गए थे। युवती घर पर अकेली थी। माता पिता जब लौटे, तो उन्होंने बेटी को फर्श पर अचेत पाया। उसे पास के निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। शुरुआती जांच में सामने आया कि युवती के शरीर पर संघर्ष के निशान थे। उसके चेहरे व छाती पर गंभीर चोटें पाई गईं। पुलिस का मानना है, आरोपी ने बर्बरता से वारदात को अंजाम दिया। उसने युवती के चेहरे को बुरी तरह नोंचा। दरिंदगी की हकीकत पांच डॉक्टरों की टीम के पोस्टमार्टम के बाद ही सामने आएगी। वहीं, फोरेंसिक विशेषज्ञों और क्राइम टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। राहुल को पैसों की हेराफेरी के शक डेढ़ महीने पहले ही नौकरी से निकाला गया था। आशंका है, इसी का बदला लेने के लिए राहुल ने वारदात की। सीसीटीवी फुटेज में वह दिखा, तो मामला खुला।

वारदात के बाद वह घर से कीमती सामान भी चुरा ले गया।

दोस्त की पत्नी से भी दुष्कर्म

जांच में सामने आया आरोपी ने वारदात से एक दिन पहले अपने गांव में दोस्त की पत्नी से दुष्कर्म किया। अलवर पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर रेप का केस दर्ज किया है। इस मामले में आरोपी की मां और चाचा नेजानकारी दी और बताया कि वह मोबाइल पर गेम खेलता था. आरोपी की मां ने कहा, राहुल अच्छा लड़का है, केवल गेम खेलता है, उसमें और कोई ऐब नहीं है राहुल की मां ने बताया कि होली के बाद वह गांव आ गया था और 21 अप्रैल को गांव में ही था. मां ने कहा,उस दिन शाम को वह एक दोस्त के साथ शादी में गया था. रास्ते में जाते वक्त उसने कोई गेम खेला और पैसे हार गया. लेकिन उसके बाद वह कहां गया या क्या हुआ इसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है. आरोपी के चाचा ने एनडीटीवी को बताया कि वह पढ़ाई में अच्छा था. चाचा ने कहा,वह पढ़ने में अच्छा था और साइंस में बीएससी की पढ़ाई की थी जिसमें उसके अच्छे नंबर आए थे. चाचा ने बताया कि उसने राजगढ़ में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी की थी लेकिन फिर वह काम करने लगा. राहुल से पहले उसका पिता ने दिल्ली में एक ऑफिस में मामूली काम करता था. लेकिन उसने काम छोड़ दिया और फिर उसकी पत्नी का भाई वहां काम करने लगा और उसी ने राहुल को भी काम दिलवा दिया.

टी.वी. समाचार चैनल...

2020 - ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल (बी.ए.आर.सी.) ने कुछ चैनलों द्वारा सिस्टम के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश करते पकड़े जाने के बाद, 3 महीने के लिए समाचार चैनलों की रेटिंग रोक दी थी। 'खराब प्रदर्शन करने वालों' को लेकर उद्योग-व्यापी चर्चा और कई बदलावों के बाद, 17 महीने बाद रेटिंग फिर से शुरू हुई। 2026 - 6 मार्च को सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने बी.ए.आर.सी. को 4 सप्ताह के लिए समाचार चैनलों की रेटिंग रिपोर्टिंग रोकने का निर्देश दिया। यह ईरान पर अमेरीका-इसराईल के हमले की सामान्य से अधिक कवरेज के मद्देनजर किया गया था। एक बड़ी मीडिया प्लानिंग एजैंसी के प्रमुख ने कहा, ''एकल-अंक (7 प्रतिशत से कम) व्यूअरशिप शेयर के साथ, समाचार अब रीच (पहुंच) का माध्यम नहीं रह गया है। इसलिए, एजैंसियां और क्लाइंट्स पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सी.टी.वी. (कनैक्टेड टी.वी.) और डिजिटल मैट्रिक्स उपलब्ध होने के कारण, बी.ए.आर.सी. रेटिंग अब कम महत्वपूर्ण है।'' भारत के सबसे बड़े विज्ञापनदाताओं में से एक के वरिष्ठ प्रबंधक ने कहा, ''टी.वी. पर हमारी निर्भरता कम हो गई है और एक शैली के रूप में समाचारों में भारी गिरावट आई है।'' यही पहला कारण है कि मंत्रालय द्वारा निजी व्यवसाय के लिए मैट्रिक्स रोकने के खिलाफ कोई विरोध नहीं हुआ। लीनियर टैलीविजन, जिसका प्रतिनिधित्व समाचार चैनल करते हैं, एक सिकुड़ते ब्रह्मांड का हिस्सा है। 2019 में, 210 मिलियन भारतीय घरों में टैलीविजन सैट था, यानी लगभग 900 मिलियन की दर्शक संख्या। ये मुख्य रूप से डायरैक्ट-टू-होम (डी.टी.एच.) या केबल वाले घर थे। महामारी और स्ट्रीमिंग के उदय के कारण, यह संख्या घटकर 157 मिलियन घर रह गई है, जो 659 मिलियन लोगों तक पहुंचती है। इसे थोड़ा और विस्तार से समझें। उन 157 मिलियन घरों में से आधे से कम डी.डी. फ्री डिश (राज्य प्रसारक की एक मुफ्त डी.टी.एच. सेवा) पर हैं। शेष 92 मिलियन घरों में केबल/डी.टी.एच. और कनैक्टेड टी.वी. का संयोजन है या इनमें से केवल एक है। ऑडियंस की अधिकांश वृद्धि डी.डी. फ्री डिश या यूट्यूब देखने वाले लोगों से आ रही है। ध्यान दें, ये 2025 की शुरुआत के आंकड़े हैं। एक उद्योग विशेषज्ञ का कहना है कि तब से इनमें और गिरावट आई होगी। 'इं.टू.' ग्रुप के मुख्य विपणन अधिकारी और मुख्य परिचालन अधिकारी विवेक मल्होत्रा का मानना है, ''हम विज्ञापन खर्च का डिजिटल की ओर स्वाभाविक पलायन देख रहे हैं क्योंकि उपभोक्ताओं की आदतें विकसित हो रही हैं। एक अद्यतन सर्वेक्षण लीनियर टी.वी. के वर्तमान परिदृश्य का अधिक सटीक प्रतिबिंबन प्रदान कर सकता है।'' यह जल्द ही हो सकता है। 27 मार्च को सरकार एक 'टी.वी. रेटिंग नीति 2026' लेकर आई, जो सभी प्लेटफार्मों-केबल, डी.टी.एच. और स्ट्रीमिंग को अपना स्वयं का व्यूअरशिप डाटा प्रकाशित करने की अनुमति देती है। सिकुड़ते टी.वी. ब्रह्मांड के भीतर, समाचार एक बहुत ही छोटा हिस्सा है। समाचार चैनल भारत में देखे जाने वाले कुल टी.वी. का 7 प्रतिशत से भी कम हिस्सा बनाते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सिकुड़ते टी.वी. विज्ञापन बजट में विज्ञापन राजस्व लगभग 4,000 करोड़ रुपए से गिरकर अनुमानित 3,000 करोड़ रुपए रह गया है। ध्यान दें कि यह टैलीविजन स्क्रीन या समाचार का प्रतिबिंबन नहीं, बल्कि 'लीनियर टी.वी. बनाम ऑन-डिमांड' सेवाओं (जैसे यूट्यूब और नैटफ्लिक्स) का परिणाम है। मल्होत्रा कहते हैं, ''सभी प्रोग्रामिंग शैलियों में से, खेल और समाचार ने एक अनूठा लचीलापन दिखाया है। वे लीनियर और डिजिटल के बीच संक्रमण को सफलतापूर्वक नेविगेट कर रहे हैं और मनोरंजन के विपरीत सभी प्लेटफार्मों पर दर्शकों के साथ एक सर्वव्यापी जुड़ाव बनाए रख रहे हैं।'' इसका मतलब है कि स्टार स्पोर्ट्स पर क्रिकेट मैच देखने वाला दर्शक जियो हॉटस्टार पर भी जाएगा। लेकिन जो स्टार प्लस पर सोप ओपेरा 'अनुपमा' देखता है, वह जरूरी नहीं कि जियो हॉटस्टार पर जाए। यदि उन्हें लीनियर टी.वी. से शिफ्ट होना पड़ा, तो वे नैटफ्लिक्स या अमेजन प्राइम वीडियो या किसी अन्य ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म पर जा सकते हैं। दूसरा, डिजिटल युग में रेटिंग अप्रासंगिक हो गई है, क्योंकि विज्ञापन अब 'परफॉर्मैंस-ड्रिवन' (प्रदर्शन-आधारित) हो गया है। विज्ञापनदाताओं ने समाचार दर्शकों को लक्षित करने के लिए सी.टी.वी. और अन्य उपकरणों का उपयोग करने के सही तरीके खोज लिए हैं।

डाबर के मार्केटिंग प्रमुख राजीव दुबे कहते हैं, ''विज्ञापन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। समाचार चैनल, उदाहरण के लिए, समय के साथ असाधारण पहुंच बनाते हैं लेकिन धैर्य और निरंतर विज्ञापन ही कुंजी है।''

किताबें, हमारी सच्ची मित्र

अच्छी पुस्तकों से श्रेष्ठ मित्र शायद ही कोई हो। संस्कारित करने, कौशल निखारने से लेकर भावनात्मक बुद्धिमत्ता की नींव रखने तक किताबों की भूमिका अपरिहार्य है। पुस्तकें पढ़ने से न केवल आत्म-जागरूकता बढ़ती है, बल्कि हमारी सोच को भी सही आकार मिलता है। ज्ञान में अप्रत्याशित वृद्धि होने के साथ-साथ, अपने आसपास की दुनिया को एक नए दृष्टिकोण से देखने-समझने की सोच भी विकसित होती है। बर्नार्ड शॉ के अनुसार, 'विचारों के युद्ध में किताबें ही अस्त्र होती हैं।' गुणवत्तापूर्ण साहित्य पढ़ने से जहां मानसिक तनाव घटता है, वहीं ज्ञान का प्रकाश समूचे तौर पर व्यक्तित्व का कायाकल्प भी कर सकता है। पुस्तकों की इसी विशेषता के मद्देनजर, ब्राजील में कैदियों के लिए एक अनूठा रोजगार प्रोग्राम चलाया गया है, जिसे 'पढ़ने के माध्यम से मुक्ति' कहा जाता है। इसके अंतर्गत, किसी किताब को पढ़कर, समीक्षा करने से सजा कम होगी। आमतौर पर एक किताब की समीक्षा पर 4 दिन की राहत मिलती है, एक वर्ष में अधिकतम 48 दिन की सजा घट सकती है।

इस अभियान का उद्देश्य जहां बंदियों की सजा में कटौती करना अथवा उन्हें तनाव मुक्त बनाना है, वहीं उससे भी कहीं अधिक अच्छी पुस्तकों द्वारा शिक्षित करके उनका व्यवहार सुधारना है, ताकि कालान्तर में एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर उन्हें मुख्यधारा में वापस लाना आसान हो। अंग्रेजी के लेखक जोसेफ एडिसन एक जगह लिखते हैं, 'पढ़ना मन और शरीर दोनों के लिए एक व्यायाम है।' निश्चय ही, इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं। किताबें, अखबार आदि पढ़ने की आदत से जहां भाषा समृद्ध होती है, वहीं उच्चारण भी शुद्ध होता है। कल्पनाशीलता को असीम आकाश मिलता है, एकाग्रता तथा स्मरणशक्ति में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी होती है। यहां तक कि 'डिजिटल शिक्षा मॉडल' को दुनिया का भविष्य मान चुके विद्वानों को भी किताबों के संबंध में अपनी सोच का पुनर्मूल्यांकन करना पड़ा। दरअसल, विगत कुछ वर्षों में हुए शोधों, अनुभवों तथा सीखने के परिणामों के दौरान शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों तथा अभिभावकों ने पाया कि तकनीकी उपयोग से पढ़ाई भले ही सरल हो गई हो, किंतु ज्ञान की सहज उपलब्धता ने बच्चों के बुनियादी कौशल भी कमजोर कर डाले। स्वीडन में हुआ एक शोध स्क्रीन पर पढ़ने वाले छात्रों की एकाग्रता तथा गहराई से समझने की क्षमता कम होने का तथ्य उजागर करता है। यही कारण है कि विश्व की सबसे अधिक डिजिटल शिक्षा प्रणालियों में गिने जाने वाले फिनलैंड, स्वीडन जैसे देश एकबारगी फिर किताब, कागज तथा पैन की ओर लौट रहे हैं। कई देशों में मोबाइल फोन, टैबलेट इत्यादि के उपयोग को सीमित अथवा प्रतिबंधित किया जा रहा है। पढ़ने-लिखने से मस्तिष्क की सक्रियता बनी रहती है, जोकि विभिन्न रोगों की रोकथाम में मददगार सिद्ध होती है। निरंतर अध्ययन का शौक भूलने की बीमारी से 40 फीसदी तक बचाव कर सकता है। अक्सर बुढ़ापे में याददाश्त खोने तथा मानसिक कमजोरी (डिमेंशिया) की समस्या से जूझना पड़ता है लेकिन इस संदर्भ में हुआ एक शोध जीवन भर पढ़ने, लिखने तथा नई भाषाएं सीखने जैसी बौद्धिक गतिविधियों में सक्रिय रहने वाले लोगों में डिमेंशिया का खतरा कम होने का खुलासा करता है।

शोध के अनुसार, दिमाग को जितना व्यस्त रखेंगे, अल्जाइमर जैसी बीमारियों को उतना ही पीछे धकेल पाएंगे। शिकागो की रश यूनिवर्सिटी मैडिकल सैंटर की शोधकर्त्ता एंड्रिया जम्मिट के नेतृत्व में हुए इस अध्ययन में पाया गया कि मानसिक स्वास्थ्य केवल बुढ़ापे की आदतों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह जीवन भर के बौद्धिक परिवेश से प्रभावित होता है। शोधकर्त्ताओं ने लगभग 1,939 बुजुर्गों पर 8 साल तक नजर रखी। इनकी औसत आयु 80 वर्ष के करीब थी। निष्कर्षों में सामने आया कि जो लोग बचपन से लेकर बुढ़ापे तक किताबों, समाचार-पत्रों, पुस्तकालयों तथा भाषा सीखने जैसे कार्यों से जुड़े रहे, उनमें अल्जाइमर का खतरा उन लोगों की तुलना में 38 फीसदी कम था, जो इन गतिविधियों में कम सक्रिय थे। मानसिक रूप से सक्रिय लोग औसतन 94 वर्ष की आयु में अल्जाइमर के शिकार हुए, जबकि सक्रिय न रहने वालों में ये लक्षण 88 वर्ष में ही दिखने लगे। डॉ. जम्मिट की मानें तो सीखने की ललक पैदा करने वाले कार्यक्रम, जैसे- लाइब्रेरी तक पहुंच तथा शुरुआती शिक्षा व्यवस्था डिमेंशिया के मामलों को कम करने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। वैज्ञानिकों ने कहा, हालांकि, यह अध्ययन पूरी तरह से कारण-प्रभाव साबित नहीं करता, लेकिन इसे एक बड़ी उम्मीद माना जा रहा है। अकेले भारत में साल 2036 तक डिमेंशिया मरीजों की संख्या 1.7 करोड़ तक पहुंचने की आशंका व्यक्त की गई है, ऐसे में पढ़ना-लिखना एक सरल एवं प्रभावी बचाव का रास्ता हो सकता है। कुल मिलाकर, अच्छा साहित्य गुणों में पारस पत्थर से किसी प्रकार भी कम नहीं, जो लोहे को भी कंचन बनाने का पूर्ण सामर्थ्य रखता है। किताबों का महत्व आंकते हुए एक बार लोकमान्य तिलक ने भी कहा था, 'किताबों में वह शक्ति होती है, जो नरक को स्वर्ग बना देती है।' आज जब समाज में नैतिक मूल्यों का पतन चरम पर है, ऐसे में देश के भविष्य को बाल्यकाल से ही अच्छी सामग्री के पठन-पाठन का अभ्यस्त बनाना अत्यधिक जरूरी जान पड़ता है। सही दिशा ज्ञान ही स्वच्छ सामाजिक वातावरण के निर्माण की राह प्रशस्त कर सकता है और इस विषय में अच्छी किताबों से बड़ा मार्गदर्शक भला कौन होगा?

-दीपिका अरोड़ा

सम्पादकीय...

समझौते की संभावना नहीं, फिर युद्ध की ओर ईरान-अमरीका

इन पंक्तियों के लिखे जाने तक निष्कर्ष यही है कि अमरीका-ईरान के बीच तत्काल शांति समझौते की संभावना खत्म हो चुकी है। हालांकि अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प बातचीत करने के अपने 2 प्रतिनिधियों स्टीव विटकॉफ और जेरेड कुशनर को इस्लामाबाद भेजने वाले थे तथा उन्होंने स्वयं कहा था कि हम समझौते के करीब हैं और इस्लामाबाद जा सकते हैं। उन्होंने ईरान की मांग को ध्यान में रखकर इसराईल-लेबनान के बीच भी 10 दिनों के युद्ध विराम की घोषणा कर दी। इसके बावजूद किसी को अगर उम्मीद रही हो कि पहले दौर की टूटी वार्ता पटरी पर लौट आई है, तो वह इस युद्ध की पृष्ठभूमि, ईरान की वर्तमान स्थिति तथा इसराईल को लेकर उसकी विचारधारा आदि का गहराई से विश्लेषण नहीं किया। बातचीत की तैयारी के बीच समाचार आया कि होर्मुज जलडमरूमध्य में अमरीकी नौसेना कमांडोज ने ईरान के गुजरते जहाज पर हमला कर उसे कब्जे में ले लिया। अमरीका ने घोषणा की कि जब तक समझौता नहीं होगा होर्मुज से ईरान का जहाज नहीं गुजरेगा। वस्तुतः अमरीका ने ईरान से होर्मुज की नाकेबंदी समाप्त करने को कहा था और ट्रम्प ने घोषणा कर दी थी कि वह ऐसा करने जा रहे हैं। स्वयं ईरान ने भी इसकी घोषणा कर दी लेकिन 24 घंटे के अंदर ही उसने नाकेबंदी जारी रखने का ऐलान कर दिया। अमरीकी राष्ट्रपति शांति समझौते की उम्मीद प्रकट करते रहे पर ईरान की ओर से आक्रामक और युद्धजनित वक्तव्य ही आते रहे। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकास्टिंग (आई.आर.ई.बी.) में कहा गया कि अमरीकी नेता हवा में किला बना रहे हैं। अमरीका एक ऐसी इच्छा प्रकट कर रहा है जिसका हकीकत से दूर तक का संबंध नहीं हो। ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेश्कियन का बयान आया कि हम अपना यूरेनियम अमरीका को नहीं सौंपेंगे। आखिर हमारा संवर्धित यूरेनियम ट्रम्प किस अधिकार के तहत लेंगे? ट्रम्प भले पाकिस्तान की प्रशंसा कर रहे हों, कह रहे हों कि ईरान शांति समझौता कर लेगा लेकिन उन्हें भी मामले की जटिलता और ईरान के इस्लामी शासन की सोच का आभास है। इसलिए, उन्होंने साथ-साथ घोषणा की थी कि दुनिया की सबसे ताकतवर नौसेना की नाकेबंदी जारी रहेगी। जब तक ईरान के साथ सौ प्रतिशत समझौता नहीं हो जाता तब तक होर्मुज की नाकाबंदी जारी रहेगी। होर्मुज ने दुनिया के लिए संकट पैदा कर दिया है और देशों को अपने जहाज अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप के रास्ते से लाने पड़ रहे हैं जो लंबा रास्ता है। 2000 से ज्यादा जहाज खाड़ी में फंसे हुए हैं। 20 लाख से ज्यादा कंटेनर रुके पड़े हैं। ईरान से सबसे ज्यादा तेल और कच्चा माल चीन खरीदता है, इसलिए अमरीकी नाकाबंदी से सबसे ज्यादा समस्या उसे है और ईरान की आय पूरी तरह अवरुद्ध हो गई है। भारत कच्चे तेल का तीसरा सबसे बड़ा आयातक है, अतः हमारे लिए भी बड़ा संकट है। विश्व की आपूर्ति शृंखला इससे प्रभावित है। आई.आर.जी.सी. के सीनियर एडवाइजर कमांडर मोहम्मद रेजा नकदी का बयान चल रहा है कि हमने कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण काम आगे के लिए छोड़ रखे हैं।

कहां जा रहे हम- कानपुर से कुरुक्षेत्र तक पिता द्वारा बच्चों की हत्याओं से कांप रही रूह, सो रहा समाज

वैसे तो हर दिन देश में विचलित करने वाली कई घटनाएं होती हैं, लेकिन यूपी के कानपुर में 11 साल की जुड़वां बेटियों की पिता द्वारा हत्या और हरियाणा के कुरुक्षेत्र में दुर्लभ बीमारी की शिकार तीन साल की मासूम बेटी की हत्या के बाद दंपती द्वारा खुदकुशी की घटना ने झकझोर दिया है। हम विकसित भारत और विश्व गुरु बनने की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन भीतर से हमारा तथाकथित सभ्य समाज कैसी घृणित वारदातों को अंजाम दे रहा है। उक्त दोनों वारदातों के बाद देश के सामाजिक तथा पारिवारिक तानेबाने के छिन्न के खतरे और संवेदनशीलता खत्म होने का संकेत मिल रहा है।

ऐसे में सवाल उठना लाजमी है कि इस सब के लिए कौन जिम्मेदार है? क्या समाज और सरकारें, मोहल्ला कमेटियां तथा अन्य धार्मिक और सामाजिक संगठन इस ओर मुंह मोड़ कर बैठे रहेंगे? या आम लोगों की जिंदगी की परेशानियों का समाधान निकालने के उपाय खोजेंगे? दंड और न्याय व्यवस्था में सिर्फ सजा का ही प्रावधान नहीं होता, बल्कि ऐसे घृणित अपराध हो ही नहीं, ऐसे इंतजाम करना भी जरूरी होता है। पंचायतों और चौपालों की व्यवस्थाओं को और मजबूत बनाने की जरूरत है, ताकि लोग वहां आकर अपनी समस्याएं साझा कर परामर्श पा सकें। सुलह और समझाइश की व्यवस्था भी पूरी तरह गोपनीय होने के साथ ही अत्यंत विश्वसनीय होना चाहिए।

पिता ने नींद में रेता रिद्धि-सिद्धि का गला

कानपुर के किदवई नगर में 18 अप्रैल शनिवार देर रात की घटना जघन्य और वीभत्स है। मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव पिता शशिरंजन मिश्रा ने अपनी दो जुड़वां बेटियों रिद्धि और सिद्धि को नींद में चाकू से गला रेत कर मार डाला। पिता शशिरंजन ने न केवल उसमे अगाध प्यार करने वाली मासूम बेटियों को मौत की नींद सुला दिया, बल्कि बच्चियों की मां रेशमा के कलेजे के भी मानो टुकड़े कर दिए। वह बेटियों को याद कर बिलख रही है। उसके आंसू नहीं सूख रहे हैं। माना जा रहा है कि पति पत्नी के बीच रिश्तों में तनाव और शक ने बेटियों की जान ले ली। पूर्व में शशिरंजन पत्नी रेशमा की भी हत्या का प्रयास कर चुका था। इसके बाद से वह अपने 6 साल के बेटे गुनु के साथ अलग कमरे में और शशिरंजन बेटियों के साथ अलग कमरे में सोता था। शशिरंजन ने हत्या के बाद खुद तड़के 3 बजे पुलिस को सूचना देकर बुलाया। पूछताछ में उसने यह भी कहा कि वह बेटियों की हत्या कर खुदकुशी करना चाहता था, लेकिन दोनों की जान लेने के बाद उसकी हिम्मत नहीं हुई। वह शंकालु इतना था कि उसने पत्नी के बेडरूम को छोड़कर पूरे फ्लैट के अंदर सीसीटीवी कैमरे लगवा रखे थे। 12 साल पहले कानपुर के मैस ब्यूटी पॉर्लर में मुलाकात के बाद पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी की रहने वाली रेशमा और शशिरंजन के बीच प्यार परवान चढ़ा और 2014 में उन्होंने प्रेम विवाह किया था। बेटियों की हत्या और पति के जेल जाने के बाद अब पूरा परिवार बिखर गया है। रेशमा अब फिर बंगाल लौटने वाली है और मासूम गुनु यह खूनी खेल समझ पाने की स्थिति में नहीं है।

कुरुक्षेत्र में जन्मदिन पर दी बेटी को फांसी, दंपती ने भी दी जान

कानपुर की तरह ही हरियाणा के कुरुक्षेत्र के प्रेमनगर में 19 अप्रैल की रात को 3 साल की मासूम बेटी अद्विका को उसके जन्म दिन के मौके पर माता-पिता ने मार डाला। जतिंदर कुमार (30) और उसकी पत्नी मंजू उर्फ युक्ता (28) ने शनिवार रात पहले अद्विका को फंदे पर लटकाया और फिर दोनों ने भी फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। सोमवार 20 अप्रैल को अद्विका का जन्मदिन था। वह सेरेब्रल हाइपोक्सिया नामक जटिल बीमारी शिकार थी। इस बीमारी में बच्चे के मस्तिष्क को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती। इससे शारीरिक और मानसिक विकलांगता हो जाती है। मरीज को मिर्गी के दौरे पड़ते हैं। यह बीमारी लाइलाज मानी गई है। दंपती ने बेटी को मां की चुन्नी से तो खुद रस्सी से फांसी लगाई। दंपती ने 18-20 पेज का सुसाइड नोट भी लिखा था। इसमें उन्होंने बेटी की बीमारी से परेशान होकर यह आत्मघाती कदम उठाने की बात लिखी है। ऐसी खुदकुशी को डाइडिक सुसाइड कहा जाता है। ऐसी दशा में दुखी व्यक्ति अपने साथ के लोगों को आत्महत्या के लिए उकसाता है या फिर हत्या करके खुद फांसी लगा लेता है। अद्विका के पिता जतिंदर कुमार ने अपने सुसाइड नोट में कनाडा में रह रहे छोटे भाई प्रतीक से आग्रह किया है कि एक महीने पहले खरीदी गई थार गाड़ी पर अद्विका का स्टीकर लगा हुआ है। उसे उसकी याद के तौर पर रख लेना। लैपटॉप से भी उसका फोटो मत हटाना। इन लाइनों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि आत्मघाती कदम उठाते वक्त भी दंपती बेटी के विछोह से कितने दुखी और उसकी यादों को कितना संजोए हुए थे। ये घटनाएं झकझोरने वाली और सोये समाज और परिजनों को जागने के लिए विवश करने वाली हैं। क्या इस आधुनिक और संचार क्रांति के युग में रिश्ते रोज-रोज तार-तार होते रहेंगे? कभी मां का तो कभी पिता और पत्नी का कत्ल होता रहेगा? और अब तो बच्चों के कत्ल होने लगे हैं। बच्चों के हत्यारे भी कोई और नहीं बल्कि पिता हैं? निसंदेह ये घटनाएं देश के केंद्रीय सामाजिक कल्याण, महिला और बाल विकास मंत्रालय के साथ ही प्रदेश स्तर के इन विभागों के लिए चेतने और चौंकाने वाली हैं। यदि जल्द परिवारों में संवेदनशीलता बढ़ाने और रिश्तों में प्रगाढ़ता तथा विश्वास लाने के उपाय नहीं किए गए तो हम विकास के शीर्ष पर पहुंचकर भी मानव विकास सूचकांक में पिछड़ते चले जाएंगे।

बिखरते परिवार सबसे बड़ी वजह

समाजशास्त्रियों का कहना है कि पारिवारिक रिश्तों में तनाव तथा खुद को या बच्चों को बीमारी से दुखी होने जैसी समस्याएं सनातन हैं, लेकिन इनसे घबराकर या दुखी होकर आत्मघाती कदम उठाने की परंपरा नहीं है। इसे थामना होगा। टूटते रिश्तों को जोड़ना होगा और एक जाजम पर बैठकर शंकाओं, समस्याओं, का निवारण करने वाला तंत्र विकसित करना होगा। हमारी समाज व परिवार व्यवस्था विश्व में अद्भुत थी, वह बीते कुछ दशकों से कमजोर हो गई है। दरअसल, मीडिया क्रांति ने सोशल मीडिया को बढ़ावा तो दिया, लेकिन इसमें व्यक्तिगत तौर पर रिश्ते कमजोर हो रहे हैं। समाज और परिवारों में मिलनसारिता कम हो रही है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर हालचाल जाने और समझे जा रहे हैं तथा दुख और खुशी का इजहार भी इन्हीं के जरिए हो रहा है। इससे व्यक्तिगत मिलन की व्यवस्था कमजोर और दुखदर्द व खुशी में साथ देने और रिश्ता निभाने की परंपरा कमजोर हो गई है। यह पाश्चात्य सोच भारतीय समाज को खोखला कर रही है। हमने कई परिवारों में मनोरोगी, विकलांग, गंभीर बीमारियों से ग्रस्त बच्चों, बूढ़ों और युवाओं को देखा है और अब भी देख रहे हैं, लेकिन एकल परिवारों के चलते अब हर समस्या को निजी मानकर उससे जूझने का सिलसिला तेज हो गया है। हम सूचनाओं को साझा तो करते हैं, लेकिन अपने या दूसरों के दुखदर्द को अपना समझ कर उन्हें हल करने में कंजूसी बरतने लगे हैं। संकट के समय साथ निभाने और खड़े रहकर हौसला और कंधा देने की हमारी सनातन परंपरा कमजोर हो रही है।

संघ का कुटुंब प्रबोधन है उपाय

देश के सबसे बड़े सामाजिक संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आरएसएस ने टूटते परिवारों और बिखरते समाज को पुन संगठित करने के लिए कुटुंब प्रबोधन का अनूठा अभियान शुरू किया है। संघ के शताब्दी वर्ष में इसे नए सिरे से छेड़ा गया है। इसके तहत परिवार के लोग सप्ताह में कम से कम एक दिन एक घंटे एक साथ बैठें, साथ भोजन करें और इस दौरान टीवी और मोबाइल फोन बंद रखने जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। इसके अलावा अलग-अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए सम्मेलन आयोजित जा रहे हैं। इनमें पारिवारिक मूल्यों और उनकी रक्षा की सीख दी जा रही है। संघ के लाखों स्वयंसेवक अपने परिवार और अपने आसपास के परिवारों तक पारिवारिक और सामाजिक विश्वास की बहाली में जुटे हैं। सभ्य, संस्कारित और संयुक्त परिवार ही भारत की पहचान है, इसकी पुनर्स्थापना नितांत जरूरी है, वरना आने वाली पीढ़ियां तबाह हो जाएंगी और सोशल मीडिया क्रांति के दौर में हमारा संगठित समाज जर्जर होकर बिखर जाएगा। जरूरत पड़ने पर हमें सोशल मीडिया पर नकेल कसने में नहीं हिचकना होगा, क्योंकि अति सर्वत्र वर्जयेत। वैश्वीकरण के दौर में वही देश टिकेगा।

जिसकी सामाजिक जड़ें मजबूत होंगी और परस्पर विश्वास कायम रहेगा।

हेल्पलाइन बन रही मददगार

बता दें, केंद्र सरकार ने खुदकुशी रोकने और आपात चिकित्सा सहायता के लिए जीवनसाथी हेल्पलाइन 18002333330 शुरू की है। इसके अलावा आप टेलीमानस हेल्पलाइन नंबर 1800914416 पर भी कॉल कर सकते हैं। यहां आपकी पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है और तत्काल मदद पहुंचाई जाती है।

अमेरिका में गन वायलेंस बनाम भारत- गन कानून और घटनाओं की तुलना -कानून, संस्कृति, इतिहास

वैश्विक स्तर पर यह स्तब्ध करने वाली घटना है कि 19 अप्रैल 2026 को एक बार फिर अमेरिका में दर्दनाक हत्याकांड हुआ है जिसमें 8 बच्चों की गोली मारकर हत्या कर दी गई है जो मास शूटिंग की बड़ी घटना है।अमेरिका में गन वायलेंस, विशेषकर स्कूलों और बच्चों को निशाना बनाने वाली घटनाएं,आधुनिक विश्व के सबसे जटिल और बहुआयामी सामाजिक संकटों में से एक बन चुकी है। यह केवल अपराध या व्यक्तिगत हिंसा का प्रश्न नहीं है, बल्कि एक ऐसा संरचनात्मक संकट है जिसमें कानून, संस्कृति मानसिक स्वास्थ्य, मीडिया प्रभाव और राजनीतिक ध्रुवीकरण सभी की भूमिका जुड़ी हुई है। लगभग एक सदी में विकसित इस समस्या को समझने के लिए इसे कालक्रम, पैटर्न, कारण और प्रभाव के व्यापक संदर्भ में देखना आवश्यक है। अभी 19 अप्रैल 2026 को श्रेवेपोर्ट में एक चौंकाने वाली और दिल दहला देने वाली घटना हुई है,जहाँ हाल के यू.एस इतिहास की सबसे खतरनाक घटनाओं में से एक में मास शूटिंग में आठ बच्चों की जान चली गई। रिपोर्ट्स के मुताबिक,यह हमला घरेलू हिंसा से जुड़ा था। संदिग्ध बंदूकधारी, जिसकी पहचान परिवार के सदस्य के तौर पर हुई है, ने कथित तौर पर अपने ही सात बच्चों और एक और बच्चे को मार डाला। पीड़ित सभी नाबालिग थे, जिनमें बहुत छोटे बच्चों से लेकर टीनएजर्स तक शामिल थे। हमले में दो महिलाएं भी गंभीर रूप से घायल हुईं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि अमेरिका में गन वायलेंस (बंदूक हिंसा) का मुद्दा केवल अपराध या कानून- व्यवस्था की समस्या नहीं रह गया है,बल्कि यह एक गहरे सामाजिक,मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक संकट का रूप ले चुका है। हाल के वर्षों में स्कूलों, सार्वजनिक स्थानों और घरों के भीतर होने वाली गोलीबारी की घटनाओं ने अमेरिकी समाज की संवेदनशीलता को झकझोर कर रख दिया है। इसी कड़ी में श्रेवेपोर्ट शहर से सामने आई एक दर्दनाक घटना ने दुनियाँ को एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आखिर अमेरिका में बंदूक संस्कृति किस हद तक विकराल रूप ले चुकी है। यह घटना केवल एक अपराध नहीं बल्कि सामाजिक विफलताओं का चरम उदाहरण है।यह घटना इसलिए भी अधिक भयावह है क्योंकि यह किसी सार्वजनिक स्थल पर नहीं, बल्कि घर के भीतर हुई। सामान्यतः घर को सबसे सुरक्षित स्थान माना जाता है, लेकिन अमेरिका में कई मामलों में घर ही सबसे खतरनाक जगह बनता जा रहा है,खासकर जब वहां हथियारों की आसान उपलब्धता हो। घरेलू हिंसा और बंदूक का संयोजन एक घातक मिश्रण बन जाता है। इस घटना ने यह उजागर किया है कि पारिवारिक विवाद, मानसिक तनाव और गन एक्सेस का मेल कितनी बड़ी त्रासदी को जन्म दे सकता है। साथियों बात अगर हम अमेरिका में गन वायलेंस विशेषकर स्कूल शूटिंग को समझें तो इसके बाद अगला स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि आखिर यह समस्या इतनी अधिक अमेरिका में ही क्यों केंद्रित है, और भारत जैसे विशाल व विविधतापूर्ण देश में यह क्यों लगभग न के बराबर दिखाई देती है।इस प्रश्न का उत्तर केवल कानून सख्त हैं या ढीले हैं जैसे सरल निष्कर्षों में नहीं छिपा है, बल्कि यह इतिहास,संविधान,सामाजिक संरचना,संस्कृति आर्थिक असमानता,मानसिक स्वास्थ्य और राजनीतिक विमर्श के जटिल अंतर्संबंधों में निहित है। इस संदर्भ में यदि अमेरिका और भारत की तुलना अंतरराष्ट्रीय स्तर के विश्लेषण के रूप में की जाए, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों देशों के बीच अंतर केवल नीतिगत नहीं बल्कि मानसिकता और संस्थागत ढांचे का भी है। साथियों बात अगर हम सबसे पहले अमेरिका की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने की करें तो अमेरिका का निर्माण ही हथियारों के साथ हुआ औपनिवेशिक काल, स्वतंत्रता संग्राम और वाइल्ड वेस्ट संस्कृति ने वहां हथियार को केवल सुरक्षा का साधन नहीं बल्कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पहचान का प्रतीक बना दिया।

यही कारण है कि सेकंड अमेंडमेंट टू द युनाइटेड स्टेट्स कंस्टीट्यूशन अमेरिकी नागरिकों को हथियार रखने का मौलिक अधिकार देता है। इस संशोधन की व्याख्या वर्षों से राजनीतिक और न्यायिक बहस का केंद्र रही है,लेकिन व्यापक रूप से इसे नागरिकों के हथियार रखने के अधिकार के रूप में ही समझा जाता है। इसके विपरीत भारत में ऐसा कोई संवैधानिक अधिकार नहीं है; यहां हथियार रखना एक विशेष अनुमति का विषय है, जिसे राज्य नियंत्रित करता है। साथियों बात अगर हम भारत में हथियारों के नियमनका मुख्य आधार आर्म्स एक्ट 1959 है, इसको समझने की करें तो, यह नागरिकों को केवल विशेष परिस्थितियों में ही लाइसेंस प्राप्त हथियार रखने की अनुमति देता है।इसके तहत लाइसेंस प्राप्त करना एक लंबी प्रशासनिक प्रक्रिया है,जिसमें पुलिस व प्रशासनिक जांच शामिल होती है। इसके उलट अमेरिका में कई राज्यों में हथियार खरीदना अपेक्षाकृत आसान है,और कुछ मामलों में बिना विस्तृत पृष्ठभूमि जांच के भी हथियार प्राप्त किए जा सकते हैं।यही कारण है कि अमेरिका में प्रति 100 नागरिकों पर हथियारों की संख्या विश्व में सबसे अधिक है,जबकि भारत में यह संख्या अत्यंत कम है।

यह अंतर केवल कानून का नहीं बल्कि कानून के पीछे की सामाजिक स्वीकृति का भी है। अमेरिका में हथियार रखने को सामान्य और वैध माना जाता है, जबकि भारत में इसे आमतौर पर असाधारण या संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता है।भारतीय समाज में हथियारों का सार्वजनिक प्रदर्शन सामाजिक रूप से स्वीकार्य नहीं है,जबकि अमेरिका में यह कई क्षेत्रों में सामान्य जीवन का हिस्सा है।

इस सांस्कृतिक अंतर का सीधा प्रभाव अपराध के पैटर्न पर पड़ता है, विशेषकर स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों पर। साथियों बात अगर हम अब यदि स्कूल गन वायलेंस की घटनाओं को देखकर समझने की करें तो तो अमेरिका में कॉलम्बीने हाई स्कूल मस्सक्रे के बाद से एक नया दौर शुरू हुआ,जिसमें स्कूलों को विशेष रूप से निशाना बनाया जाने लगा। यह घटना केवल एक अपराध नहीं थी, बल्कि एक सांस्कृतिक टर्निंग पॉइंट थी, जिसने आगे आने वाले हमलावरों के लिए एक खतरनाक उदाहरण स्थापित किया। इसके बाद सैंडी हुक एलिमेंटरी स्कूल शूटिंग और उवाल्दे स्कूल शूटिंग जैसी घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब यह समस्या केवल किशोरों तक सीमित नहीं रही, बल्कि छोटे बच्चों तक पहुंच चुकी है। भारत में इसके विपरीत स्कूलों में इस प्रकार की सामूहिक गोलीबारी की घटनाएं लगभग न के बराबर हैं।

इसका एक कारण यह भी है कि यहां हथियारों तक पहुंच सीमित है, लेकिन इसके अलावा भी कई महत्वपूर्ण कारण हैं। भारतीय समाज में परिवार और समुदाय की भूमिका अपेक्षाकृत अधिक मजबूत है, जिससे किशोरों में अलगाव की भावना अपेक्षाकृत कम होती है। हालांकि यह कहना पूरी तरह सही नहीं होगा कि भारत में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं नहीं हैं बल्कि कई मामलों में यह समस्याएं दबा दी जाती हैं लेकिन वे अमेरिका की तरह हिंसात्मक विस्फोट के रूप में कम सामने आती हैं। साथियों बात अगर हम अमेरिका में गन वायलेंस को बढ़ाने वाले कारकों को समझने की करें तो उनमें एक प्रमुख तत्व व्यक्तिवाद है। वहां व्यक्ति की स्वतंत्रता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिससे सामाजिक नियंत्रण अपेक्षाकृत कम हो जाता है। इसके विपरीत भारत में सामूहिकता की प्रवृत्ति अधिक है,जहां परिवार और समाज व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। यह अंतर भी हिंसा के स्वरूप को प्रभावित करता है।अमेरिका में जहां व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करने की प्रवृत्ति रखता है, वहीं भारत में व्यक्ति अक्सर परिवार या समाज के माध्यम से समाधान खोजने का प्रयास करता है।इसके अलावा मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। अमेरिका में कई हमलावरों ने पहले से अपनी योजनाओं को ऑनलाइन साझा किया या पिछले हमलों से प्रेरणा ली।

इसे -कॉपीकैट इफेक्ट- कहा जाता है, जो कॉलम्बीने हाई स्कूल मस्सक्रे के बाद से लगातार देखा गया है। भारत में भी सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ रहा है, लेकिन वहां इस प्रकार की हिंसात्मक प्रेरणा अभी तक व्यापक रूप से नहीं फैली है।एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है कानून का प्रवर्तन।अमेरिका में पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां अत्याधुनिक होने के बावजूद कई घटनाओं में प्रतिक्रिया देने में विफल रही हैं, जैसे उवाल्दे स्कूल शूटिंग में देखा गया। इसके विपरीत भारत में भले ही पुलिस संसाधनों की कमी से जूझती हो,लेकिन स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों पर हथियारों की अनुपस्थिति के कारण इस प्रकार की त्वरित प्रतिक्रिया की आवश्यकता बहुत ही कम पड़ती है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने बन्ना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पैंचशील्ड एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2019/...)

यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम में बीआईसी पडरौना का शानदार प्रदर्शन- जनपद की सूची में फरहान 7वें, अंकित 8वें स्थान पर, हाईस्कूल में भी छात्रों का रहा दबदबा

कुशीनगर।

पडरौना स्थित बीआईसी (भारतीय इंटरमीडिएट कॉलेज) ने यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी शैक्षणिक साख को मजबूती से स्थापित किया है। घोषित परिणाम में इंटरमीडिएट वर्ग के दो विद्यार्थियों ने जनपद की टॉप-10 सूची में स्थान बनाकर विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। इंटरमीडिएट परीक्षा में फरहान जमाल ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जनपद में सातवां स्थान हासिल किया, जबकि अंकित ने 89.8 प्रतिशत अंकों के साथ आठवां स्थान प्राप्त कर टॉप-10 सूची में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इन दोनों छात्रों की उपलब्धि से विद्यालय परिवार में उत्साह और गर्व का माहौल है। हाईस्कूल वर्ग में भी बीआईसी के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा।

प्रिया कुशवाहा एवं अंशु मद्धेशिया ने संयुक्त रूप से 92.6 प्रतिशत अंक अर्जित कर विद्यालय में शीर्ष स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा सौम्या साह ने 91.6 प्रतिशत, आकृति ने 91 प्रतिशत तथा सुरभि सिंह ने 90.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्कृष्टता की मिसाल पेश की। विद्यालय के प्रबंध निदेशक एन.पी. कुशवाहा ने कहा कि यह सफलता विद्यार्थियों की कठोर मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सतत सहयोग का परिणाम है। उन्होंने कहा कि संस्थान भविष्य में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रतिस्पर्धा के उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रधानाचार्य नवेंदु भूषण कुशवाहा ने कहा कि इंटरमीडिएट में छात्रों का जनपद स्तर पर स्थान बनाना विद्यालय के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने विश्वास जताया कि यह सफलता अन्य विद्यार्थियों को भी उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करेगी। इस अवसर पर प्रशासनिक अधिकारी शत्रुघ्न जायसवाल, इंचार्ज डी.एन. राय, अशोक पांडेय, उमाकांत गुप्ता, इब्राहिम अंसारी, आर.के. भट्ट, चंदन मद्धेशिया, सच्चिदानंद कुशवाहा, बबलू गुप्ता, कन्हैया कुशवाहा, संदीप कुशवाहा सहित समस्त स्टाफ ने सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय की इस उपलब्धि से अभिभावकों में खुशी की लहर है।

निर्वाण सेवा संस्थान द्वारा विश्व पृथ्वी दिवस पर संगोष्ठी कर लिया गया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

कुशीनगर। विश्व पृथ्वी दिवस पर निर्वाण सेवा संस्थान, कुशीनगर द्वारा संगोष्ठी और पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया। नगरपालिका परिषद कुशीनगर अंतर्गत छत्रपति शिवा जी इंटर कालेज, बनवारी टोला में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबंधक ध्रुव सिंह पटेल ने कहा कि वैश्विक तापक्रम वृद्धि और प्राकृतिक संसाधनों के क्षय जैसे मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। विश्व पृथ्वी दिवस के माध्यम से मानव अस्तित्व के लिए पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक कार्यकर्ता संजय सिंह ने कहा कि पृथ्वी पर महासागर और भूमि असंख्य जीवों का घर हैं। हमें इस पृथ्वी को बचाने के लिए अधिक से अधिक पौधरोपण करना होगा। जिससे पर्यावरण संरक्षित और प्रदूषण मुक्त होगा। विद्यालय के प्रभारी अभिनव कुशवाहा ने बढ़ते प्रदूषण पर चिंता व्यक्त करते हुए जागरूकता अभियान पर जोर दिया। आयोजक संस्था के कार्यक्रम समन्वयक हृदया नन्द शर्मा ने कहा कि संस्थान के प्रबंधक और मुंबई हाईकोर्ट के अधिवक्ता विजेंद्र कुमार राय के निर्देशन में संस्था द्वारा राष्ट्र हित में शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवा और सामुदायिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इस दौरान उपस्थित सभी को स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया।

जेईई मेंस में के.के. पब्लिक एकेडमी के छात्रों का जलवा

आयुष कुमार विश्वकर्मा

आदर्श दीक्षित

भटनी देवरिया।

के.के. पब्लिक एकेडमी सीनियर सेकेंडरी भटनी के विद्यार्थियों ने एक बार फिर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय एवं क्षेत्र का नाम रोशन किया है। कक्षा बारहवीं के नियमित छात्र आदर्श दीक्षित एवं आयुष विश्वकर्मा ने जेईई मेंस परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है।

आदर्श दीक्षित ने 96 पर्सेंटाइल तथा आयुष विश्वकर्मा ने 95 पर्सेंटाइल अंक हासिल कर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। दोनों छात्रों की इस उपलब्धि से विद्यालय परिवार में खुशी की लहर है।

आदर्श 96 व आयुष 95 पर्सेंटाइल के साथ चमके, स्कूल में खुशी की लहर

विद्यालय के कार्यकारी निदेशक अजय वर्मा एवं प्रबंधक बी.के. श्रीवास्तव ने इसे विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम बताया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार ने दोनों छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

कुशीनगर के मेधावियों का जलवा- आरुषि गुप्ता ने किया टॉप, कई छात्रों ने 90फीसदी से अधिक अंक हासिल किए

कुशीनगर।

यूपी बोर्ड इंटरमीडिएट परीक्षा परिणाम में जनपद कुशीनगर के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जिले का नाम रोशन किया है। जारी टॉप-10 सूची में छात्र-छात्राओं ने बेहतरीन अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। जिले में कुमारी आरुषि गुप्ता (आर.के.एम. इंटर कॉलेज, कोकिलपट्टी, दुदही) ने 465/500 (93.00फीसदी) अंक प्राप्त कर पहला स्थान हासिल किया। दूसरे स्थान पर अमन कुमार (श्रीमती राजली देवी इंटरमीडिएट कॉलेज, परगनमठिया) और अभिनव कुमार शर्मा (श्री महेंद्र प्रताप लाल स्काई इंटर कॉलेज, पड़रही) संयुक्त रूप से 459/500 (91.80त) अंक के साथ रहे। इनके साथ ही उजमा अंसारी (बिशप इंटरनेशनल एकेडमी, खड्डा) ने भी समान अंक प्राप्त कर जिले में उच्च स्थान बनाया। टॉप सूची में आगे सुमैया (महर्षि अरविंद विद्या मंदिर, कसया) ने 457 अंक (91.40फीसदी), शिवान्या (सरस्वती इंटर कॉलेज, परसौनी, नेबुआ रायगंज) ने 456 अंक (91.20फीसदी) और आयुष कुमार (श्रीमती राजली देवी इंटरमीडिएट कॉलेज, परगनमठिया) ने 455 अंक (91.00फीसदी) प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इसके अलावा प्रज्ञा (के.के. इंटर कॉलेज, डंडोपुर) ने 453 अंक (90.60फीसदी), फरहान जमाल (भारतीय इंटरमीडिएट कॉलेज, पडरौना) ने 450 अंक (90.00फीसदी), अंकित (भारतीय इंटरमीडिएट कॉलेज, पडरौना) ने 449 अंक (89.80फीसदी) और अमृत मणि तिवारी (बुद्धा इंटर कॉलेज, कुशीनगर) ने 448 अंक (89.60फीसदी) हासिल कर टॉप-10 में अपनी जगह बनाई। वहीं गरिमा राही (कृषक इंटर कॉलेज, मल्लूडीह) ने 447/500 (89.40फीसदी) अंक प्राप्त कर सूची में स्थान सुनिश्चित किया। इस वर्ष खास बात यह रही कि टॉप सूची में छात्राओं का दबदबा देखने को मिला। अधिकांश स्थानों पर बेटियों ने बाजी मारी, जो जिले में शिक्षा के बढ़ते स्तर और जागरूकता को दर्शाता है। विद्यालयों के प्रबंधकों एवं शिक्षकों ने छात्रों की सफलता पर खुशी जताते हुए इसे उनकी कड़ी मेहनत, अनुशासन और मार्गदर्शन का परिणाम बताया।

यूपी बोर्ड परीक्षा परिणाम घोषित- 84.47फीसदी परीक्षार्थी हुए सफल

कुशीनगर। माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में जनपद कुशीनगर का प्रदर्शन संतोषजनक रहा है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार कुल 50,662 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिनमें से 47,788 छात्र-छात्राएं परीक्षा में सम्मिलित हुए। इनमें 40,365 परीक्षार्थी सफल घोषित किए गए, जिससे जनपद का कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 84.47 रहा। वहीं, समग्र रूप से देखें तो कुल 58,338 परीक्षार्थी पंजीकृत थे, जिनमें से 55,150 परीक्षा में शामिल हुए और 51,838 परीक्षार्थियों ने सफलता हासिल की।

इस प्रकार कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 93.99 दर्ज किया गया, जो कि बेहतर परिणाम की ओर संकेत करता है। शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अनुसार इस वर्ष परीक्षा परिणाम में सुधार देखने को मिला है। विद्यालयों में बेहतर शैक्षणिक माहौल, नियमित कक्षाएं तथा शिक्षकों के मार्गदर्शन का सकारात्मक प्रभाव परिणामों में साफ झलक रहा है। जिले के शिक्षकों एवं अभिभावकों ने सफल छात्रों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। वहीं, असफल छात्रों को निराश न होकर आगे और बेहतर तैयारी के साथ प्रयास करने की सलाह दी गई है।

अंतरराष्ट्रीय योग खिलाड़ी अर्पण ने मुख्यमंत्री से लिया आशीर्वाद

गोरखपुर।

अंतरराष्ट्रीय योग खिलाड़ी और श्रीलंका में आयोजित योगासन प्रतियोगिता में दो पदक जीतने वाली अर्पण कन्नौजिया ने गुरुवार सुबह गोरखनाथ मंदिर के बैठक कक्ष में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंटकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। एकेडमिक ग्लोबल स्कूल, जंगल धूसढ़ में कक्षा 12 की छात्रा अर्पण ने अपने पदक मुख्यमंत्री को दिखाते हुए बताया कि वह चार वर्ष की आयु से ही नियमित रूप से योगाभ्यास कर रही हैं।

मुख्यमंत्री ने उनकी इस उपलब्धि की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान कीं। सीएम योगी का आशीर्वाद लेने के बाद अर्पण ने बताया कि उनकी इस सफलता में विद्यालय का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विद्यालय प्रबंधन द्वारा समय-समय पर प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया गया, जिससे वह राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकीं।

एकेडमिक ग्लोबल स्कूल के चेयरमैन इं. संजीव कुमार ने कहा कि अर्पण की उपलब्धि न केवल विद्यालय, बल्कि पूरे क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है। उन्होंने कहा कि प्रतिभा को सही दिशा और निरंतर अभ्यास के माध्यम से ही निखारा जा सकता है। विद्यालय हमेशा से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है और आगे भी खेल व योग जैसे क्षेत्रों में छात्रों को प्रोत्साहित करता रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि योग न केवल शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है, बल्कि मानसिक संतुलन और अनुशासन भी सिखाता है, जो आज के समय में हर विद्यार्थी के लिए आवश्यक है।

ऑपरेशन 'मिलाप' में गोरखपुर पुलिस की बड़ी सफलता, 313 लड़कियों की सकुशल बरामदगी

गोरखपुर।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. कोस्तुभ के निर्देशन में गोरखपुर पुलिस द्वारा चलाया जा रहा ऑपरेशन मिलाप मानवीय संवेदनाओं का एक सशक्त उदाहरण बनकर सामने आया है। इस अभियान के तहत वर्ष 2026 में अब तक 313 अपहृत/लापता लड़कियों को सकुशल बरामद कर उनके परिजनों से मिलाया गया है, जिससे सैकड़ों परिवारों में फिर से खुशियां लौट आई हैं।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इन मामलों में अधिकांश लड़कियों को बहला-फुसलाकर या झांसा देकर घर से दूर ले जाया गया था। कई मामलों में उन्हें अन्य जनपदों या राज्यों तक पहुंचा दिया गया था। ऐसे मामलों को गंभीरता से लेते हुए गोरखपुर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए विशेष टीमों का गठन किया और खोजबीन अभियान शुरू किया। ऑपरेशन मिलाप के तहत पुलिस ने

बहला-फुसलाकर ले जाई गई अपहृताओं को खोजकर परिजनों से कराया मिलान, परिवारों में लौटी खुशियां

तकनीकी साक्ष्यों, मोबाइल सर्विलांस, सीसीटीवी फुटेज और मुखबिर तंत्र का सहारा लेकर लापता लड़कियों का पता लगाया। टीमों ने लगातार संभावित स्थानों पर दबिश दी और कई जटिल मामलों का सफलतापूर्वक खुलासा किया। एसएसपी डॉ. कोस्तुभ ने सभी थाना प्रभारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि अपहरण एवं गुमशुदगी के मामलों में तत्काल मुकदमा दर्ज कर तेजी से कार्रवाई की जाए। साथ ही पीड़ित परिवारों से नियमित संवाद बनाए रखते हुए उन्हें प्रगति की जानकारी दी जाए। पुलिस की तत्परता और सक्रियता का ही परिणाम है कि बड़ी संख्या में लड़कियों को सकुशल बरामद कर उनके परिजनों को सौंपा गया। कई मामलों में परिजनों ने अपनी बेटियों के सुरक्षित वापस मिलने पर भावुक होकर पुलिस का आभार व्यक्त किया। इस अभियान के तहत न केवल अपराधियों पर प्रभावी कार्रवाई की गई, बल्कि समाज में सुरक्षा और विश्वास का माहौल भी मजबूत हुआ है। पुलिस द्वारा लगातार यह संदेश दिया जा रहा है कि महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और ऐसे मामलों में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। गोरखपुर पुलिस का ऑपरेशन मिलाप आगे भी इसी तरह जारी रहेगा, ताकि हर लापता बेटी को सुरक्षित उसके परिवार तक पहुंचाया जा सके और समाज में कानून व्यवस्था के प्रति विश्वास और अधिक मजबूत हो।

दिल्ली में अटल कैंटीन मॉडल में होगा बड़ा बदलाव, टाइमिंग से लेकर फ्री भोजन तक पर मंथन

नई दिल्ली। दिल्ली में शहरी गरीबों, मजदूरों और अन्य वंचित लोगों के लिए जो अटल कैंटीन खोली गई थी, उसमें बड़े बदलाव की तैयारी की जा रही है। इस बदलाव से फोकस केवल भोजन उपलब्ध कराने पर नहीं, बल्कि इसे लोगों की दिनचर्या के अनुरूप और ज्यादा उपयोगी बनाने पर है। इसी कड़ी में सरकार टाइमिंग, तकनीक और लागत जैसे कई पहलुओं पर एक साथ काम कर रही है। झुग्गी बस्तियों और दिहाड़ी मजदूरों से मिले फीडबैक ने साफ कर दिया कि मौजूदा समय-सारिणी उनके काम के घंटों से टकरा रही है। कई लोग काम के कारण समय पर नहीं पहुंच पाते, जिससे उन्हें योजना का पूरा लाभ नहीं मिल पाता। इसी वजह से अब भोजन वितरण को पहले से एक और देर तक जारी रखने की रणनीति बनाई गई है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका फायदा उठा सकें। इसके तहत सुबह 10:30 बजे से दोपहर 2 बजे तक और शाम 6 बजे से रात 9:30 बजे तक भोजन वितरण की योजना है, जबकि वर्तमान में 11:30 से दोपहर 2 बजे तक और शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक भोजन का वितरण किया जाता है। नई व्यवस्था के तहत सुबह का भोजन पहले शुरू होगा और रात का समय बढ़ाया जाएगा। इसके लिए दिल्ली अर्बन इंफ्रास्ट्रक्चर बोर्ड ने सरकार से औपचारिक मंजूरी मांगी है। इससे उन लोगों को राहत मिलने की उम्मीद है जो सुबह जल्दी काम पर निकल जाते हैं या देर शाम लौटते हैं। फिलहाल यह प्रस्ताव मंजूरी के चरण में है और हरी झंडी मिलते ही इसे लागू किया जा सकता है। सिर्फ समय ही नहीं, बल्कि सिस्टम को भी अपडेट करने की तैयारी है। टोकन सिस्टम में इस्तेमाल होने वाली फेस रिकॉग्निशन तकनीक के डेटा को अब सीमित अवधि तक ही सुरक्षित रखने की योजना बनाई गई है। यह कदम डेटा सुरक्षा और गोपनीयता को ध्यान में रखते हुए उठाया जा रहा है। योजना के तहत हर कैंटीन में 500 थाली भोजन देने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन वास्तविकता में यह लक्ष्य पूरा नहीं हो पा रहा है। कई जगहों में तय संख्या से कम लोगों को ही भोजन मिल रहा है। इसकी एक बड़ी वजह समय का असंगत होना माना जा रहा है, जिसे अब सुधारने की कोशिश हो रही है। सरकार अब इस योजना को और आगे ले जाने की दिशा में भी सोच रही है। चर्चा इस बात पर हो रही है कि क्या अटल कैंटीन में भोजन पूरी तरह मुफ्त किया जा सकता है। इसके लिए एक ऐसा मॉडल तैयार करने पर विचार है, जिसमें वेंडरों को बुनियादी सुविधाएं बिना लागत के दी जाएं और बदले में वे लोगों को निशुल्क भोजन उपलब्ध कराएं। अगर ये सभी बदलाव लागू होते हैं, तो अटल कैंटीन सिर्फ एक भोजन योजना नहीं, बल्कि शहरी गरीबों के लिए एक मजबूत सहारा बन सकता है।

बंगाल में वोटिंग का नया रिकॉर्ड, पहले फेज में 93फीसदी मतदान

ममता बोलीं- एसआईआर के विरोध में बंपर वोटिंग; तमिलनाडु के इतिहास में सबसे यादा 85फीसदी वोट पड़े

कोलकाता/चेन्नई ।

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में गुरुवार को बंपर वोटिंग हुई। बंगाल की 294 सीटों में से 152 सीटों पर पहले फेज में 92.72फीसदी मतदान हुआ। वहीं, तमिलनाडु की सभी 234 सीटों पर 85.14फीसदी वोटिंग हुई। चुनाव आयोग के आंकड़े रात 9 बजे तक है। इनमें बदलाव हो सकता है। दोनों राज्यों में आजादी के बाद अब तक सबसे यादा वोटिंग हुई है। इससे पहले तमिलनाडु में सबसे यादा मतदान 2011 में 78.29फीसदी था, जबकि बंगाल में 2011 में 84.72फीसदी मतदान दर्ज किया गया था। ममता ने वोटिंग के बाद कहा- बंगाल की जनता ने एसआईआर के खिलाफ बंपर वोटिंग की है। गृह मंत्री शाह ने कहा कि टीएमसी का सूरज ढल चुका है। इससे पहले असम, केरलम और पुडुचेरी में भी 9 अप्रैल को रिकॉर्ड वोटिंग हुई थी। असम के इतिहास में सबसे यादा 85.91फीसदी, पुडुचेरी में 90फीसदी और केरलम में 1987 के बाद सबसे यादा 78.27फीसदी वोटिंग हुई थी। पांचों राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजे 4 मई को एकसाथ आएंगे।

बंगाल में वोटिंग के दौरान मारपीट-झड़प, 5 घटनाएं

बंगाल के दक्षिण मिदनापुर में कुमारगंज सीट से भाजपा कैंडिडेट सुवेंदु सरकार को भीड़ ने दौड़ा-दौड़ाकर पीटा। उनका सिक्योरिटी गार्ड उनके साथ था। इसके बावजूद भीड़ ने उन्हें खदेड़ दिया।

पश्चिम बर्धमान जिले के बर्नपुर में आसनसोल साउथ सीट से भाजपा उम्मीदवार अग्निमित्रा पॉल की कार पर हमला हुआ। इससे गाड़ी के पीछे का शीशा टूट गया। अग्निमित्रा ने बताया कि उनकी कार पर पत्थर फेंके गए।

बीरभूम के बोधपुर गांव में ईवीएम खराब होने के बाद लोगों ने पुलिस और सेंट्रल फोर्स पर पथराव कर दिया। पुलिस की गाड़ी में तोड़फोड़ भी की। घटना में कई सुरक्षाकर्मी घायल हो गए।

मुर्शिदाबाद के नौदा में बुधवार देर रात देसी बम से हमले में कई लोग घायल हो गए। आम जनता उन्नयन पार्टी चीफ हुमायूं कबीर सुबह घटनास्थल पर पहुंचे। इस दौरान उनके समर्थकों और टीएमसी कार्यकर्ताओं के बीच मारपीट, पथराव हुआ। पुलिस ने लाठीचार्ज किया। हुमायूं की कार पर पत्थरों और लाठियों से हमला किया गया।

सिलीगुड़ी के जगदीश चंद्र विद्यापीठ में भाजपा और टीएमसी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। बूथ के बाहर दोनों पार्टी के कार्यकर्ताओं के बीच बहस हो गई। विवाद बढ़ता देख सुरक्षाबलों ने दोनों पक्षों को शांत कराया। यहां से शंकर घोष भाजपा प्रत्याशी हैं।

भय जा रहा, भरोसा आ रहा

बंगाल में गरजे पीएम मोदी, बोले- झालमुड़ी मैंने खाई, मिर्ची टीएमसी को लगी

नादिया। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए 152 सीटों पर मतदान हो रहा है। इसी बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नदिया जिले के कृष्णानगर में एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने चुनाव आयोग की जमकर तारीफ की और टीएमसी सरकार पर तीखा हमला बोला।

चुनाव आयोग की क्या तारीफ की?

पीएम मोदी ने कहा, मैं कह सकता हूं कि पिछले 50 वर्षों में यह पहला ऐसा चुनाव है जिसमें हिंसा बिल्कुल न्यूनतम स्तर पर है। उन्होंने कहा कि पहले तो हर हफ्ते किसी को फांसी पर लटका देना और उसे आत्महत्या बता देना आम बात थी। वहां अराजकता और गुंडागर्दी का राज था। मैं चुनाव आयोग को हार्दिक बधाई देता हूं, उन्होंने एक बार फिर बंगाल की धरती पर लोकतंत्र की गरिमा स्थापित की है। पीएम मोदी ने आगे कहा, मैं यहां के सरकारी कर्मचारियों की भी सराहना करता हूं। मुझे अब तक मिली जानकारी के आधार पर, मतदान पिछले सभी रिकार्ड तोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि कृष्णानगर में आज भय पर भरोसे की विजय का विश्वास दिख रहा है। बरसों से जिनकी आवाज को दबाकर रखा गया था, वो अब एक सुर में बोल रहे हैं।

झालमुड़ी का जिक्र करते हुए टीएमसी पर तंज

प्रधानमंत्री ने टीएमसी पर तंज कसते हुए कहा, झालमुड़ी मैंने खाई और मिर्ची टीएमसी को लग रही है। उन्होंने कहा कि टीएमसी के विधायकों, मंत्रियों, स्थानीय नेताओं और उनके सिंडिकेट के खिलाफ इतना गुस्सा है कि टीएमसी कई शहरों में अपना खाता भी नहीं खोल पाएगी। 15 साल पहले लोगों ने वामपंथियों के खिलाफ बिगुल फूंका था। आज टीएमसी के जंगल राज के विरोध में बंगाल की जनता गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले में शंख फूंक रही है।

यह चुनाव जनता लड़ रही है- पीएम मोदी

पीएम मोदी ने कहा कि यह चुनाव हम नहीं लड़ रहे हैं, इस बार बंगाल में चुनाव खुद यहां की जनता लड़ रही है। उन्होंने कहा, यह उत्साह, यह उमंग, यह जोश भरोसे का है। भय जा रहा है, भरोसा आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि गांव-गांव, गली-गली, स्त्री-पुरुष, युवा-बुजुर्ग सब एक साथ बोल रहे हैं और बदलाव चाहते हैं।

दिल्ली में सूरज ने बरसाई आग, पारा पहुंचा 41डिग्री के पार, गुरुवार रहा सीजन का सबसे गर्म दिन

नई दिल्ली । राजधानी में गर्मी ने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। बृहस्पतिवार को अधिकतम तापमान सामान्य से चार डिग्री अधिक 41.7 डिग्री पहुंच गया। यह इस सीजन का अब तक का सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया। इससे पहले 17 अप्रैल को तापमान 41 डिग्री सेल्सियस पहुंचा था। बीते साल 26 अप्रैल को अधिकतम तापमान 42.1 डिग्री रहा था, जो कि सीजन का सबसे गर्म दिन था। न्यूनतम तापमान भी 25 डिग्री के पार पहुंच गया है। बृहस्पतिवार रिज इलाके में तापमान 43 डिग्री तक दर्ज हुआ। पालम में 41.6 डिग्री, लोधी रोड में 41.4 डिग्री तक तापमान रहा। गर्मी के तेवर भले ही कड़े रहे हों लेकिन लू अभी नहीं चली। हालांकि, गर्म हवाओं के थपेड़ों ने लोगों को जरूर परेशान कर दिया। बुधवार को सफदरजंग मानक केंद्र में अधिकतम तापमान 40.7 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था, जो सामान्य से लगभग 3 डिग्री अधिक था। मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में तापमान में और बढ़ोतरी की संभावना है। मौसम विभाग ने 24 व 25 अप्रैल के लिए येलो अलर्ट जारी किया है।

26 से बदलेगा मौसम

अभी तेज सतही हवाएं तापमान को तेजी से बढ़ने से रोक रही थी, लेकिन शुक्रवार को हवा कुछ धीमी हो सकती है, जिससे तापमान 42-44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। इसके बाद 26 अप्रैल से मौसम में बदलाव की संभावना है। एक नया पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा। इस दौरान बिजली चमकेगी, धूल भरी आंधी और तेज हवाएं चल सकती हैं। इससे तापमान में मामूली सी गिरावट देखने को मिल सकती है। तापमान 40-42 डिग्री के बीच ही बना रहेगा। नए पश्चिमी विक्षोभ का कुछ खास असर दिल्ली में देखने को नहीं मिलेगा।

ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटने से तीन किशोरियों समेत पांच की मौत, 22 लोग घायल

लखीमपुर खीरी । लखीमपुर खीरी के पढ़ुआ थाना क्षेत्र में बृहस्पतिवार दोपहर मुंडन संस्कार कराने जा रहे ग्रामीणों की ट्रैक्टर-ट्रॉली अनियंत्रित होकर पलट गई। इस भीषण हादसे में पांच ग्रामीणों की मौके पर ही मौत हो गई, जिनमें दो महिलाएं और तीन किशोरियां शामिल हैं। दुर्घटना में 22 अन्य लोग घायल हुए हैं, जिन्हें रमियाबेहड़ सीएचसी में भर्ती कराया गया है। यह हादसा ढखेरवा चौराहा से बहराइच के गिरिजापुरी बैराज जाने वाले मार्ग पर पढ़ुआ क्षेत्र में बोझिया फार्म के थोड़ा आगे हुआ। जानकारी के मुताबिक शारदा नगर थाने के सोहरिया गांव के लोग बहराइच जनपद के कारीकोट में बच्चे का मुंडन कराने जा रहे थे। ट्रैक्टर में दो ट्रॉलियां जुड़ी हुई थीं, जिनमें मुख्य रूप से महिलाएं और बच्चे सवार थे। गिरिजापुरी बैराज जाने वाले मार्ग पर अचानक ट्रैक्टर अनियंत्रित हो गया। इसके बाद ट्रैक्टर और दोनों ट्रॉलियां पलट गईं, जिससे मौके पर चीख-पुकार मच गई। हादसे की सूचना मिलते ही पढ़ुआ थाना पुलिस तुरंत घटनास्थल पर पहुंची। ग्रामीणों की मदद से पुलिस ने ट्रॉलियों के नीचे फंसे लोगों को बाहर निकाला। सभी घायलों को तत्काल रमियाबेहड़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पहुंचाया गया, जहां उनका उपचार जारी है।

चंबा-कोटीकॉलोनी मार्ग पर वाहन खाई में गिरा, अंतिम संस्कार के लौट रहे आठ लोगों की मौके पर मौत

टिहरी । चंबा-कोटीकॉलोनी मार्ग पर नैल के समीप एक वाहन खाई में गिर गया। वाहन में आठ लोग सवार थे। इस दौरान आठों की मौके पर मौत हो गई। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी बृजेश भट्ट ने आठ लोगों की मौत की पुष्टि की है। वहीं, दो लोग अभी घायल हैं। जिन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया है। जानकारी के अनुसार सभी लोग घनसाली के चांवी, ठेला और चक्करेड़ा गांव के थे, जो किसी के अंतिम संस्कार में शामिल होने हरिद्वार गए थे और वापस आ रहे थे।

परिसीमन के नाटक से ध्यान भटका रही बीजेपी, ईंधन और उर्वरक संकट पर खरगे ने सरकार को घेरा

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भारतीय सरकार पर देश के ईंधन और उर्वरक आपूर्ति को सुरक्षित करने में विफल रहने और परिसीमन के नाटक के माध्यम से ध्यान भटकाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भारत का ईंधन उत्पादन कम हो गया है, आयात विविधीकरण लड़खड़ा गया है, और होर्मुज जलडमरूमध्य में भारतीय ध्वज वाले 14 जहाज फंसे हुए हैं। खरगे ने एक्स पर लिखा कि प्रधानमंत्री मोदी सरकार ने परिसीमन के हथकंडों के जरिए अपनी विफलताओं और एपस्टीन फाइल्स के गंभीर आरोपों से ध्यान हटाने की कोशिश की, लेकिन भारत ने इस दिखावे को भांप लिया। भाजपा देश के लिए ईंधन और उर्वरक सुरक्षा सुनिश्चित करने में बुरी तरह विफल रही है। खरगे ने आगे कहा कि उत्पादन में गिरावट आई है, आयात विविधीकरण विफल रहा है, होर्मुज जलडमरूमध्य में हमारे जहाजों को सुरक्षित मार्ग नहीं मिल पा रहा है। भारतीय ध्वज वाले 14 जहाज 54 दिनों से वहां फंसे हुए हैं। मोदी सरकार की वजह से भारत का कच्चा तेल उत्पादन 2025-26 में लगातार 11वें वर्ष गिर रहा है। कुल कच्चे तेल उत्पादन में 2014-15 से लगभग 22फीसदी की गिरावट आई है। खरगे ने आगे बताया कि गैस उत्पादन में लगभग 40फीसदी की गिरावट आई है, जो 2011-12 में 47,555 मिलियन मीट्रिक स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर से गिरकर 2020-21 में 28, 672 मिलियन मीट्रिक स्टैंडर्ड क्यूबिक मीटर हो गया है। उर्वरक भंडार के बारे में उन्होंने कहा कि भू-राजनीतिक उथल-पुथल से पहले भी, कई मौसमों में उर्वरक की कमी की खबरें आ रही थीं। भाजपा की उदासीनता के दुष्परिणामों से भारतीय किसान बुरी तरह पीड़ित हैं। उन्होंने आगे कहा कि मार्च 2026 में उर्वरक उत्पादन पांच साल के निचले स्तर पर आ गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 24.6 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई।

उन्होंने कहा कि चीन ने जुलाई 2025 में ही विशेष उर्वरकों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन मोदी सरकार ने आयात में विविधता लाने की जहमत नहीं उठाई। रूस ने भी अब उर्वरक निर्यात रोक दिया है। खरगे ने मार्गदर्शक मंडल के सदस्य श्री मुरली मनोहर जोशी का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की परोक्ष रूप से आलोचना की, जिन्होंने हाल ही में सुझाव दिया था कि भारत को विश्वगुरु की बयानबाजी बंद कर देनी चाहिए।

भरूच की केमिकल फैक्ट्री में धमाके के बाद लगी भीषण आग, कई मजदूर झुलसे

नई दिल्ली। गुजरात में भरूच जिले के औद्योगिक केंद्र झगड़िया GIDC की मेट्रोपॉलिटन एक्सीकेम कंपनी के प्लांट में जोरदार धमाके के बाद भीषण आग लग गई। शुरुआती रिपोर्ट के मुताबिक, इस हादसे में 10 से यादा मजदूर गंभीर रूप से झुलस गए हैं। GIDC में एक बार फिर इस हादसे ने सुरक्षा से जुड़े सवालों को खड़ा कर दिया है। अभी तक मिली जानकारी के मुताबिक, केमिकल फैक्ट्री में अचानक जबरदस्त धमाका हो गया। ये धमाका इतना जोरदार था कि उसकी आवाज आस-पास के गांवों तक सुनाई दी। प्लांट में हादसे के समय कई मजदूर ड्यूटी पर थे। धमाका होते ही जान बचाने के लिए मजदूरों के बीच भगदड़ मच गई। इस हादसे में 10 से यादा मजदूर आग की चपेट में आकर गंभीर रूप से झुलस गए हैं। सभी घायलों को तुरंत एम्बुलेंस के जरिए अंकलेश्वर स्थित जयाबेन मोदी अस्पताल पहुंचाया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है।

केमिकल फैक्ट्री होने की वजह से आग तेजी से फैलने लगी। हालांकि घटना की सूचना मिलते ही, झगड़िया, अंकलेश्वर और आस-पास की कंपनियों से दमकल गाड़ियों का एक काफिला तुरंत मौके पर पहुंच गया। दमकलकर्मियों ने फोम और पानी का इस्तेमाल करके आग काबू में करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन आग पर पूरी तरह काबू पाने के लिए युद्धस्तर पर बचाव कार्य जारी है। फैक्ट्री में आग लगने का सटीक कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है। शुरुआती चरण में, यह आशंका जताई जा रही है कि गैस रिसाव या शॉर्ट सर्किट के कारण धमाका हुआ होगा। पुलिस और औद्योगिक सुरक्षा विभाग की एक टीम मौके पर पहुंचकर जांच शुरू करेगी। फिलहाल, प्रशासन की पहली प्राथमिकता आग को और फैलने से रोकना और प्लांट में फंसे किसी भी व्यक्ति को सुरक्षित बाहर निकालना है।

बंगाल में 89.93फीसदी; तमिलनाडु में 82.24 फीसदी मतदान हुआ

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में बंपर वोटिंग हुई। पश्चिम बंगाल में शाम साढ़े पांच बजे तक 89.93 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। वहीं, तमिलनाडु में भी लोगों ने बढ़-चढ़कर लोकतंत्र के महापर्व में हिस्सा लिया है और यहां शाम साढ़े पांच बजे तक 82.24 प्रतिशत मतदान हुआ है।पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान बहरामपुर सीट से कांग्रेस उम्मीदवार अधीर रंजन चौधरी ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली और क्षेत्र के माहौल पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में सत्ता विरोधी लहर (एंटी-इंकम्बेंसी) के साथ-साथ एसआईआर (स्पेशल ऑब्जर्वर रिपोर्ट/सिस्टम) का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा है। चौधरी ने कहा कि हालांकि कांग्रेस ने शुरुआत से ही इस व्यवस्था का विरोध किया था, लेकिन इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं।

ईरान बोला- ट्रम्प का सीजफायर एकतरफा- अमेरिकी नाकेबंदी हटेगी तभी बात करेंगे; अमेरिकी राष्ट्रपति बोले- कल तक अच्छी खबर आ सकती है

तेल अवीव । ईरान ने अमेरिका के साथ किसी भी तरह के सीजफायर से इनकार किया है। ईरानी संसद के स्पीकर मोहम्मद बाकेर कालीबाफ ने कहा कि मौजूदा समय में सीजफायर तभी संभव है, जब नाकाबंदी हटाई जाए। ईरान और अमेरिका के बीच 22 अप्रैल को सीजफायर खत्म हो गया था। ट्रम्प ने इसके खत्म होने से पहले ही इसे एकतरफा तरीके से आगे बढ़ा दिया था। वहीं, ट्रम्प ने कहा कि ईरान के साथ शांति वार्ता के दूसरे दौर को लेकर शुक्रवार तक अच्छी खबर आ सकती है। न्यूयॉर्क पोस्ट की एक रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प ने एक संदेश में यह बात कही। पाकिस्तानी अधिकारियों ने भी संकेत दिया है कि ईरान के साथ अगले 36 से 72 घंटों के भीतर नई बातचीत शुरू हो सकती है। हालांकि, ईरान का कहना है कि उसने अभी तक यह तय नहीं किया है कि वह अमेरिका के साथ नए दौर की वार्ता में शामिल होगा या नहीं। वहीं, राष्ट्रपति मसूद पजशकियान ने बुधवार को सोशल मीडिया पर लिखा कि ईरान बातचीत के लिए तैयार है, लेकिन उसके विरोधी धमकियों और आक्रामक कदमों के जरिए बातचीत को कमजोर कर रहे हैं।

निरोगी हरियाणा का कीर्तिमान,1 करोड़ लोगों की हुई मुफ्त स्क्रीनिंग... 5.86 करोड़ लैब टेस्ट का बना रिकॉर्ड

चंडीगढ़ । हरियाणा सरकार के प्रमुख निवारक स्वास्थ्य कार्यक्रम निरोगी हरियाणा ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। अब तक, इस योजना के तहत एक करोड़ से ज्यादा लोगों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है, जबकि 5.86 करोड़ से ज्यादा लैब टेस्ट मुफ्त किए गए हैं। इससे राज्य में बीमारियों की समय पर पहचान और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच को व्यापक बढ़ावा मिला है।

हरियाणा के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने एक उच्च-स्तरीय समीक्षा बैठक के दौरान यह बात कही। उन्होंने बताया कि 21 अप्रैल, 2026 तक इस योजना के तहत अंत्योदय परिवारों के 1,00,07,430 लाभार्थियों की स्क्रीनिंग की जा चुकी है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए शुरू की गई इस पहल के तहत 5,86,60,875 मुफ्त लैब टेस्ट किए गए हैं, जिससे हजारों परिवारों का खर्च कम हुआ है। उन्होंने कहा कि शुरुआत में यह योजना उन परिवारों के लिए लागू की गई थी जिनकी वार्षिक आय 1.8 लाख रुपये तक थी। अब इसका विस्तार करके इसमें उन परिवारों को भी शामिल किया गया है जिनकी आय 3 लाख रुपये तक है। इस बदलाव के साथ, लाभार्थियों की संख्या 1.59 करोड़ से बढ़कर लगभग 2.30 करोड़ हो गई है। तीसरे चरण में, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशों के अनुसार, 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी नागरिकों को, उनकी आय की परवाह किए बिना, इस योजना में शामिल किया जा रहा है। इस कदम को बुजुर्गों की स्वास्थ्य सुरक्षा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है। डॉ. मिश्रा ने कहा कि यह कार्यक्रम अब केवल अस्पतालों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि लोगों के घर-घर तक पहुंच रहा है। इसके तहत 1,11,116 आउटरीच शिविर (कैंप) आयोजित किए गए, जिनमें 38.63 लाख से ज्यादा लोगों की स्क्रीनिंग की गई। मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से 12,579 शिविर लगाकर लगभग 2.8 लाख लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं। इसके अलावा, 25,907 आंगनवाड़ियों, 14,316 स्कूलों और 13,034 औद्योगिक और ज्यादा जोखिम वाले इलाकों में स्क्रीनिंग की गई है, ताकि सभी उम्र के लोग और सभी इलाकों के लोग इस योजना का लाभ उठा सकें। उन्होंने कहा कि निरोगी हरियाणा कार्यक्रम उम्र के हिसाब से स्वास्थ्य स्क्रीनिंग की सुविधाएं देता है। इसमें शारीरिक जांच, जरूरी शारीरिक संकेतों की निगरानी, लैब टेस्ट, बीमारियों की पहचान, इलाज और जरूरत के हिसाब से बड़े अस्पतालों में भेजने जैसी सेवाएं शामिल हैं। यह कार्यक्रम एनीमिया, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, दिल की बीमारी, कैंसर और जन्मजात बीमारियों जैसी बीमारियों का समय पर पता लगाना सुनिश्चित करता है। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि इसके जरिए कई गंभीर बीमारियों का शुरुआती दौर में ही पता चल गया है। कैंसर, दिल की बीमारी, नर्वस सिस्टम से जुड़ी दुर्लभ बीमारियों और गंभीर एनीमिया से पीड़ित मरीजों को समय पर बड़े मेडिकल संस्थानों में भेजा गया और उनका इलाज किया गया, जिससे कई लोगों की जान बचाने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी द्वारा वर्ष 2026-27 के बजट में की गई घोषणा के अनुसार, अब यह कार्यक्रम 70 वर्ष से अधिक उम्र के सभी नागरिकों को कवर करेगा, चाहे उनकी आय कुछ भी हो। यह कदम वरिष्ठ नागरिकों को एक बड़ा सुरक्षा कवच देगा। इस योजना के तहत अब तक कुल 8,69,966 बीमारियों की पहचान की गई है। इनमें एनीमिया के 2,99,090 मामले, हाई ब्लड प्रेशर के 1,33,528 मामले, डायबिटीज के 1,05,238 मामले, दिल की बीमारी के 6,410 मामले, कैंसर के 1,257 मामले और टीबी के 3,518 मामले शामिल हैं। यह पहल शुरुआती 32 जगहों से बढ़कर पूरे राज्य में 2,000 से ज्यादा स्वास्थ्य केंद्रों तक पहुंच गई है।